सुतीक्ष्ण उवाच

हृदये मानसी पूजा कीदृशी च वद प्रभो। उपचारैः कतिविधैः पूज्यते रघुनन्दनः ॥५५॥

अगस्त्य उवाच

रामं पद्मविशालाक्षं कालाम्बुदसमप्रभम्। स्मितवक्त्रं सुखासीनं चिन्तयेच्चित्तपुष्करे ॥५६॥
रागादिकलुषं चित्तं वैराग्येण सुनिर्मलम्। कृत्वा ध्यायेत्सदा रामं भवबन्धविमुक्तये ॥५७॥
प्रातः शुद्धवपुर्भूत्वा शौचादिभिरतंद्रितः। विविक्तदेशमाश्रित्य ध्यानं पूजां समारभेत् ॥५८॥
नाभिकुन्दसमुद्भूतं कदलीकुसुमोपमम्। अष्टपत्रं स्निग्धवर्णं ध्यायेद्धृदयपंकजम् ॥५९॥
तत्पद्मं रामनाम्नैव फुल्लं कृत्वाऽस्य मध्यमे। भावयेत्सूर्यसोमाग्निमण्डलानुत्तरोत्तरम् ॥६०॥
तस्योपरि न्यसेद्दिव्यं पीठं रत्नमयोज्ज्वलम्। तन्मध्ये राघवं ध्यायेत्सूर्यकोटिसमप्रभम् ॥६१॥
इंदीवरनिभं शांतं विशालाक्षं सुवक्षसम्। उद्यद्दीधितमद्भास्वत्कुण्डलाभ्यां विराजितम् ॥६२॥
सुनासं सुकिरीटं च सुकपोलं शुचिस्मितम्। विज्ञानमुद्रं द्विभुजं कंबुग्रीवं सुकुन्तलम् ॥६३॥
नानारत्नमयैर्दिव्यहारैर्भूषितमव्ययम्। विद्युत्पुञ्जप्रतीकाशं वस्त्रयुग्मधरं हरिम् ॥६४॥

सुतीक्ष्णने कहा—हे प्रभो! उपासकोंको मानसी पूजा कैसे करनी चाहिये। इस पूजामें किन-किन उपचारोंसे रामका पूजन किया जाता है, सो आप बतलाइए ॥ ५५ ॥ अगस्त्यने कहा कि उपासकको चाहिए कि पहले वह अपने हृदयरूपी कमलपर बैठे हुए रामका इस प्रकार ध्यान करे—जिनके कमलकी तरह विशाल नेत्र हैं। काले मेघके समान नील वर्ण है। मुस्कराता हुआ मुख है और वे आनन्दपूर्वक बैठे हैं ॥ ५६ ॥ उपासकका यह भी कर्तव्य है कि राग-द्वेष आदिसे कलुषित चित्तको वैराग्यसे निर्मल कर ले। तब भवपाशसे मुक्त होनेके लिए रामका ध्यान करे ॥ ५७ ॥ सवेरे शरीरको पवित्र करके तन्द्राको सर्वथा छोड़कर किसी एकान्त स्थानमें ध्यान और पूजन करे ॥ ५८ ॥ नाभि-कुण्डसे निकले हुए कदलीपुष्पके समान आठ दलोंवाले और चिकने हृदयरूपी कमलका ध्यान करे ॥ ५९ ॥ उस कमलको रामनामसे विकसित करके बीचमें सूर्य, सोम एवं अग्निमण्डलसे भी अधिक प्रकाशमान तेजका ध्यान करे ॥ ६० ॥ उसपर रत्नमय उज्ज्वल चौकी रखनेकी भावना करके उसके बीचोबीच करोड़ों सूर्यके समान प्रकाशमान रामका ध्यान करे ॥ ६१ ॥ कमलकी नाईं जिनकी विशाल आँखें है। दमकती हुई दीप्तिसे प्रकाशित कुण्डल जिनके कानोंमें पड़े हैं ॥ ६२ ॥ जिनकी सुन्दर नासिका है, जो सुन्दर किरीट धारण किये हैं, जिनका सुन्दर कपोल है, मीठी मुसकान है, वे विज्ञानमुद्रा धारण कियेहैं, उनकी दो भुजाएँ है, शंखके समान ग्रीवा है, उनके काले और चमकते हुए केशपाश हैं, जो अनेक रत्नोंसे गुंथी दिव्य माला पहने हैं, जिनका कभी भी

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

वीरासनस्थं संतानतरुमूलनिवासिनम् । महासुगन्धलिप्ताङ्गं वनमालाविराजितम् ॥६५॥
वामपार्श्वे स्थितां सीतां चामीकरसमप्रभाम् । लीलापद्मधरां देवीं चारुहासां शुभाननाम् ॥६६॥
पश्यंतीं स्निग्धया दृष्ट्या दिव्यां कल्पविराजिताम् । छत्रचामरहस्तेन लक्ष्मणेन सुसेवितम् ॥६७॥
हनुमत्प्रमुखैर्नित्यं वानरैः परिवारितम् । स्तूयमानं ऋषिगणैः सेवितं भरतादिभिः ॥६८॥
सनन्दनादिभिश्चान्यैर्योगिवृंदैः स्तुतं सदा । सर्वशास्त्रार्थकुशलं योगज्ञं योगसिद्धिदम् ॥६९॥
एवं ध्यात्वा रामचन्द्रं मणिद्वयसुशोभितम् । शुद्धेन मनसा रामं पूजयेत्सततं हृदि ॥७०॥

इति ध्यानम् ।

आवाहयामि विश्वेशं जानकीवल्लभं विभुम् । कौसल्यातनयं विष्णुं श्रीरामं प्रकृतेः परम् ॥७१॥
राजाधिराज राजेन्द्र रामचन्द्र महीपते । रत्नसिंहासनं तुभ्यं दास्यामि स्वीकुरु प्रभो ॥७२॥
श्रीरामागच्छ भगवन् रघुवीर रघूत्तम । जानक्या सह राजेन्द्र सुस्थिरो भव सर्वदा ॥७३॥
रामचन्द्र महेष्वास रावणांतक राघव । यावत्पूजां समाप्येऽहं तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥७४॥
रघुनन्दन राजर्षे राम राजीवलोचन । रघुवंशज मे देव श्रीरामाभिमुखो भव ॥७५॥
प्रसीद जानकीनाथ सुप्रसिद्ध सुरेश्वर । प्रसन्नो भव मे राजन् सर्वेश मधुसूदन ॥७६॥
शरणं मे जगन्नाथ शरणं भक्तवत्सल । वरदो भव मे राजन् शरणं मे रघूत्तम ॥७७॥
त्रैलोक्यपावनानन्त नमस्ते रघुनायक । पाद्यं गृहाण राजर्षे नमो राजीवलोचन ॥७८॥
परिपूर्ण परानन्द नमो रामाय वेधसे । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृष्ण विष्णो जनार्दन ॥७९॥
ॐनमो वासुदेवाय तत्त्वज्ञानस्वरूपिणे । मधुपर्कं गृहाणेमं राजाराजाय ते नमः ॥८०॥

विनाश नहीं होता, जो विद्युत्पुंजके समान दमकते हुए वस्त्रोंके जोड़े पहने हैं, वीरासनसे बैठे हैं, कल्पवृक्षके नीचे निवास करते हैं, उत्तम सुगन्ध जिनके शरीरभरमे मली हुई है और जो वरमाला धारण किये हुए हैं ॥६३-६५॥ जिनके बायें बगलमें सीताजी बैठी हैं, उनका भी सुवर्ण सरीखा तेज है, वे हाथोंमें लीलापद्म लिये हैं, मुखपर मन्द मुस्कराहट है, सुन्दर चेहरा है और प्रेमभरी दृष्टिसे रामको निहारती हुई कल्पवृक्षके नीचे बैठी हैं। हाथमें छत्र और चमर लेकर लक्ष्मणजी रामकी सेवा कर रहे हैं ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ हनुमान आदि वानरोंसे वे नित्य घिरे रहते हैं। कितने ही ऋषि स्तुति करते हैं और भरत आदि भ्राता उनकी सेवा कर रहे हैं। सनन्दन आदि कितने ही योगी उनकी स्तुति कर रहे हैं। वे राम समस्त शास्त्रोंके अर्थ जाननेमें कुशल हैं। योगक्रियाको भी वे जानते हैं और योगसिद्धिके दाता हैं ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ कौस्तुभ तथा चिन्तामणि इन दोनों मणियोंसे सुशोभित रामचन्द्रका ध्यान करके शुद्ध मनसे नीचे लिखी विधिके अनुसार सदा हृदयमें उनका पूजन करे ॥ ७० ॥ संसारके ईश, जानकीके वल्लभ, कौसल्याके पुत्र, प्रकृतिसे पर और विष्णुरूपधारी श्रीरामका मैं आवाहन करता हूँ ॥ ७१ ॥ हे राजाओंके राजा रामचन्द्र ! हे महापते ! मैं आपको रत्नमय सिंहासन देता हूं, उसे स्वीकार करें ॥ ७२ ॥ हे श्रीराम ! हे भगवन् ! हे रघुवीर ! हे रघुत्तम ! हे राजेन्द्र ! आप जानकीजीके साथ आइये और इस हृदयासनपर बैठिए ॥ ७३ ॥ हे रामचन्द्र ! हे महान् धनुष धारण करनेवाले ! हे रावणान्तक ! हे राघव ! जब तक मै पूजन समाप्त न कर लूँ, तब तक आप मेरे पास रहिए ॥ ७४ ॥ हे रघुनन्दन ! हे राजर्षे ! हे राजीवलोचन राम ! हे रघुवंशज ! हे देव ! हे श्रीराम ! आप मेरे सम्मुख प्रकट हों ॥ ७५ ॥ हे जानकीनाथ ! हे सुप्रसिद्ध सुरेश्वर ! आप मेरेपर प्रसन्न हों। हे राजन् ! हे सर्वेश ! हे मधुसूदन ! आप मेरेपर प्रसन्न हों ॥ ७६ ॥ हे जगन्नाथ ! मैं आपकी शरणमें हूँ। हे भक्तवत्सल ! आप मेरे वरदाता हों। हे रघूत्तम ! मैं आपकी शरणमे हूँ ॥ ७७ ॥ हे अनन्त ! हे त्रैलोक्यपावन ! हे रघुनायक ! आपको प्रणाम है। हे राजर्षे ! इस पद्मको ग्रहण करिए। हे राजावलोचन राम ! आपको प्रणाम है ॥ ७८ ॥ परिपूर्ण परमानन्द ब्रह्मरूपधारी रामको प्रणाम है । हे कृष्ण ! हे विष्णो ! हे जनार्दन ! मेरे दिये हुए अर्घ्यको आप ग्रहण करें ॥ ७९ ॥ तत्त्वज्ञानके साक्षात् स्वरूप वासुदेवको प्रणाम है। हे राजराज ! आपको प्रणाम है। आप मेरे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

नमः सत्याय शुद्धाय बुध्न्याय ज्ञानरूपिणे । गृहाणाचमनं देव सर्वलोकैकनायक ॥८१॥
ब्रह्मांडोदरमध्यस्थैस्तीर्थैश्च रघुनन्दन । स्नापयिष्याम्यहं भक्त्या त्वं गृहाण जनार्दन ॥८२॥
संतप्तकांचनप्रख्यं पीतांबरमिमं हरे । संगृहाण जगन्नाथ रामचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥८३॥
श्रीरामाच्युत यज्ञेश श्रीधरानन्द राघव । ब्रह्मसूत्रं सोत्तरीयं गृहाण रघुनायक ॥८४॥
किरीटहारकेयूररत्नकुंडलमेखलाः । ग्रैवेयकौस्तुभं हारं रत्नकंकणनूपुरान् ॥८५॥
एवमादीनि सर्वाणि भूषणानि रघूत्तम । अहं दास्यामि ते भक्त्या संगृहाण जनार्दन ॥८६॥
कुंकुमागरुकस्तूरीकर्पूरोन्मिश्रचन्दनम् । तुभ्यं दास्यामि विश्वेश श्रीराम स्वीकुरु प्रभो ॥८७॥
तुलसीकुन्दमन्दारजातिपुन्नागचम्पकैः । कदंबकरवीरैश्च कुसुमैः शतपत्रकैः ॥८८॥
नीलांबुजैर्बिल्वदलैः पुष्पमाल्यैश्च राघव । पूजयिष्याम्यहं भक्त्या संगृहाण नमोऽस्तु ते ॥८९॥
वनस्पतिरसैर्दिव्यैर्गन्धाढ्यैः सुमनोहरैः । रामचन्द्र महीपाल धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥९०॥
ज्योतिषां पतये तुभ्यं नमो रामाय वेधसे । गृहाण दीपकं राजंस्त्रैलोक्यतिमिरापहम् ॥९१॥
इदं दिव्यान्नममृतं रसैः षड्भिर्विराजितम् । श्रीराम राजराजेन्द्र नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥९२॥
नागवल्लीदलैर्युक्तं पूगीफलसमन्वितम् । तांबूलं गृह्यतां राम कर्पूरादिसमन्वितम् ॥९३॥
मङ्गलार्थं महीपाल नीराजनमिदं हरे । संगृहाण जगन्नाथ रामचन्द्र नमोऽस्तु ते ॥९४॥

अथ नमस्काराष्टकमन्त्राः

ॐ नमो भगवते श्रीरामाय परमात्मने । सर्वभूतांतरस्थाय ससीताय नमो नमः ॥९५॥
ॐ नमो भगवते श्रीराम रामचन्द्राय वेधसे । सर्ववेदांतवेद्याय ससीताय नमो नमः ॥९६॥
ॐ नमो भगवते श्रीविष्णवे परमात्मने । परात्पराय रामाय ससीताय नमो नमः ॥९७॥

किये हुए इस पूजनको ग्रहण करिए ॥ ८० ॥ सत्य, शुद्ध, बुध्न्य और ज्ञानस्वरूप भगवान्‌को प्रणाम है। हे देव ! हे सर्वलोकैकनायक ! मेरे दिये हुए इस आचमनको आप ग्रहण करें ॥ ८१ ॥ ब्रह्माण्डमें जितने तीर्थ हैं, उनके जलसे मैं आपको स्नान कराऊँगा। सो आप स्वीकार करें ॥ ८२ ॥ हे हरे ! अच्छी तरह तपाये हुए सुवर्णके समान इस पीताम्बरको आप ग्रहण कीजिए। हे जगन्नाथ ! हे रामचन्द्र ! आपको प्रणाम है ॥ ८३ ॥ हे श्रीराम ! हे अच्युत ! हे यज्ञेश ! हे श्रीधरानन्द ! हे राघव ! हे रघुनायक ! उत्तरीय वस्त्रके साथ दिये हुए मेरे इस यज्ञोपवीतको आप ग्रहण करें ॥ ८४ ॥ किरीट, हार, केयूर, रत्नजटित कुण्डल, मेखला, माला, कौस्तुभका हार, रत्नजटिल कंकण, नूपुर, इस प्रकार सब तरहके आभूषण मैं आपको भक्तिपूर्वक दूँगा। सो आप ग्रहण करिए ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ कुमकुम, अगुरु, कस्तूरी तथा कर्पूरसे मिश्रित चन्दन हे विश्वेश ! हे श्रीराम ! हे प्रभो ! मैं आपको दूँगा। सो आप स्वीकार करें ॥ ८७ ॥ तुलसी, कुन्द, मन्दार, जूही, पुन्नाग, चम्पक, कदम्ब, करवीर तथा शतपत्रके फूल, नीलकमल, बिल्वपत्र और पुष्पमाल्योंसे मैं आपका पूजन करूँगा। उसे आप ग्रहण करें। मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ वनस्पतिके दिव्य रसों और सुगन्धसे मिश्रित दिव्य धूप आपको आघ्रापन कराऊँगा। हे रामचन्द्र ! हे महोपाल ! आप इसे ग्रहण करें ॥ ९० ॥ संसारके सारे ज्योतिर्मय पदार्थोंके पति हे राम ! हे वेधः ! आपको नमस्कार है। हे राजन् ! तीनों लोकका अंधकार नष्ट करनेवाले इस दीपकको आप ग्रहण करिए। छः रसोंसे युक्त तथा अमृतके समान सुस्वादु यह दिव्यान्न तैयार है। हे श्रीराम ! हे राजराजेन्द्र ! आप इस नैवेद्यको ग्रहण करिए ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ पानके पत्तोंसे जोड़े हुए, सुपारी तथा कर्पूरादि मसालोंसे युक्त इस ताम्बूलको आप ग्रहण करें ॥ ९३ ॥ हे महीपाल ! हे हरे ! मङ्गलके निमित्त दिये हुए मेरे इस नीराजनको आप ग्रहण करें। हे जगन्नाथ ! हे रामचन्द्र ! आपको प्रणाम है ॥ ९४ ॥ अब आठ नमस्कार बतलाते हैं। भगवान्, श्रीराम, परमात्मा, सब प्राणियोंके भीतर रहनेवाले, सीताके साथ रामचन्द्रजी-को प्रणाम है ॥ ९५ ॥ भगवान् श्रीरामचन्द्र, वेधा और सब वेदांत जाननेवाले सीताके पति रामको प्रणाम है ॥ ९६ ॥ भगवान् विष्णु, परमात्मा, परात्पर एवं सीताके साथ विराजमान रामको प्रणाम है ॥ ९७ ॥

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ॐनमो भगवते श्रीरघुनाथाय शार्ङ्गिणे । चिन्मयानन्दरूपाय ससीताय नमो नमः ॥९८॥
ॐनमो भगवते श्रीराम श्रीकृष्णाय चक्रिणे । विशुद्धज्ञानदेहाय ससीताय नमो नमः ॥९९॥
ॐनमो भगवते श्रीवासुदेवाय श्रीविष्णवे । पूर्णानन्दैकरूपाय ससीताय नमो नमः ॥१००॥
ॐनमो भगवते श्रीराम रामभद्राय वेधसे । सर्वलोकशरण्याय ससीताय नमो नमः ॥१०१॥
ॐनमो भगवते श्रीरामायामिततेजसे । ब्रह्मानन्दैकरूपाय ससीताय नमो नमः ॥१०२॥

इति नमस्काराष्टकमन्त्राः ।

नृत्यगीतादिवाद्यादिपुराणपठनादिभिः । राजोपचारैरखिलैः सन्तुष्टो भव राघव ॥१०३॥
विशुद्धज्ञानदेहाय रघुनाथाय विष्णवे । अन्तःकरणसंशुद्धिं देहि मे रघुनन्दन ॥१०४॥
नमो नारायणानंत श्रीराम करुणानिधे । मामुद्धर जगन्नाथ घोरात्संसारसागरात् ॥१०५॥
रामचन्द्र महेष्वास शरणागततत्पर । त्राहि मां सर्वलोकेश तापत्रयमहानलात् ॥१०६॥
श्रीकृष्ण श्रीकर श्रीश श्रीराम श्रीनिधे हरे । श्रीनाथ श्रीमहाविष्णो श्रीनृसिंह कृपानिधे ॥१०७॥
गर्भजन्मजराव्याधिघोरसंसारसागरात् । मामुद्धर जगन्नाथ कृष्ण विष्णो जनार्दन ॥१०८॥
श्रीराम गोविंद मुकुंद कृष्ण श्रीनाथ विष्णो भगवन्नमस्ते ।
प्रौढारिषड्वर्गमहाभयेभ्यो मां त्राहि नारायण विश्वमूर्ते ॥१०९॥
श्रीरामाच्युत यज्ञेश श्रीधरानन्द राघव । श्रीगोविन्द हरे विष्णो नमस्ते जानकीपते ॥११०॥
ब्रह्मानन्दैकविज्ञानं त्वन्नामस्मरणं नृणाम् । त्वत्पदांबुजसद्भक्तिं देहि मे रघुवल्लभ ॥१११॥
नमोऽस्तु नारायण विश्वमूर्ते नमोऽस्तु ते शाश्वत विश्वयोने ।
त्वमेव विश्वं सचराचरं च त्वामेव सर्वं प्रवदंति सन्तः ॥११२॥
नमोऽस्तु ते कारणकारणाय नमोऽस्तु कैवल्यफलप्रदाय ।
नमो नमस्तेऽस्तु जगन्मयाय वेदांतवेद्याय नमो नमस्ते ॥११३॥

भगवान्, श्रीरघुनाथ, शार्ङ्गी, चिन्मयानन्दस्वरूप और सीतापति रामको प्रणाम है ॥ ९८ ॥ भगवान्, श्रीरामकृष्ण, चक्री, विशुद्ध ज्ञानदेहधारी, सीताके साथ रामको प्रणाम है ॥ ९९ ॥ भगवान् श्रीवासुदेव-स्वरूप, विष्णु, पूर्णानन्दस्वरूप सीताके साथ रामको प्रणाम है ॥ १०० ॥ भगवान्, श्रीरामभद्र, वेधा (ब्रह्मा) और सब लोगोंके शरणदाता सीताके साथ रामको प्रणाम है ॥ १०१ ॥ जो अनन्त तेजधारी भगवान् रामचन्द्रजी हैं। उन ब्रह्मानन्दके एकमात्र रूपधारी सीताके साथ रामको प्रणाम है ॥ १०२ ॥ हे राघव ! मेरे नृत्य, गीत, वाद्य तथा पुराण-पठन आदि समस्त राजोचित उपचारोंसे आप प्रसन्न हों ॥ १०३ ॥ विशुद्ध ज्ञानरूप देह धारण करनेवाले श्रीरघुनाथजीको प्रणाम है। हे रघुनन्दन ! आप हमें अन्तःकरणकी शुद्धि प्रदान करिए ॥ १०४ ॥ हे नारायण ! हे अनन्त ! हे श्रीराम ! हे करुणानिधे ! आपको प्रणाम है। हे जगन्नाथ ! हमारा घोर संसारसागरसे उद्धार करें ॥ १०५ ॥ हे रामचन्द्र ! हे महेष्वास ! हे शरणागत-तत्पर ! हे सर्वलोकेश ! हमें तापत्रयरूपी महानलसे बचाइए ॥ १०६ ॥ हे कृष्ण ! हे श्रीश ! हे श्रीराम ! हे श्रीनिधे ! हे श्रीनाथ ! हे महाविष्णो ! हे श्रीनृसिंह ! हे कृपानिधे ! गर्भ, जन्म, जरा तथा व्याधिस्वरूप घोर संसारसागरसे मुझे उबारिए। हे जगन्नाथ ! हे कृष्ण ! हे विष्णो ! हे जनार्दन ! ॥१०७॥१०८॥ हे श्रीराम ! हे गोविन्द ! हे मुकुन्द ! हे कृष्ण ! हे श्रीनाथ ! हे विष्णो ! हे भगवन् ! आपको नमस्कार है। हे नारायण ! हे विश्वमूर्ति ! प्रौढ़ अरिषड्वर्गके महाभयसे मेरी रक्षा करिए ॥ १०९ ॥ हे श्रीराम ! हे अच्युत ! हे यज्ञेश ! हे श्रीधरानन्द राघव ! हे गोविन्द ! हे हरे ! हे विष्णो ! हे जानकीपते ! आपको नमस्कार हैं ॥ ११० ॥ हे रघु-वल्लभ ! आपका नामस्मरण ब्रह्मानन्दके विज्ञानको उत्पन्न करता है। आप हमें अपने चरणकमलकी सद्भक्ति प्रदान करिए ॥ १११ ॥ हे कारणोंके भी कारण ! आपको नमस्कार है। हे कैवल्य फल प्रदान करनेवाले प्रभो ! आपको प्रणाम है। हे जगन्मय ! हे वेदान्तवेद्य ! आपको नमस्कार है, नमस्कार है ॥ ११२ ॥ हे भरतके अग्रज !

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

नमो नमस्ते भरताग्रजाय नमोऽस्तु यज्ञप्रतिपालनाय ।
अनंत यज्ञेश हरे मुकुंद गोविंद विष्णो भगवन्मुरारे ॥११४॥
श्रीवल्लभानन्त जगन्निवास श्रीराम राजेंद्र नमो नमस्ते ।
श्रीजानकीकांत विशालनेत्र राजाधिराज त्वयि मेऽस्तु भक्तिः ॥११५॥
तप्तजाम्बूनदेनैव निर्मितं रत्नभूषितम् । स्वर्णपुष्पं रघुश्रेष्ठं दास्यामि स्वीकुरु प्रभो ॥११६॥
हृत्पद्मकर्णिकामध्ये सीतया सह राघव । निवस त्वं रघुश्रेष्ठ सर्वैरावरणैः सह ॥११७॥
मनोवाक्कायजनितं कर्म यद्वा शुभाशुभम् । तत्सर्वं प्रीतये भूयान्नमो रामाय शार्ङ्गिणे ॥११८॥
अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया । दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व रघुपुंगव ॥११९॥
नमस्ते जानकीनाथ रामचन्द्र महीपते । पूर्णानन्दैकरूप त्वं गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥१२०॥
एवं यः कुरुते पूजां बहिर्वा हृदयेऽपि च । सकृत्पूजनमात्रेण राम एव भवेन्नरः ॥१२१॥
किं पुनः सततं ब्रह्मण्येवं पूज्य स्थितो हि सः । सर्वान्कामानवाप्नोति चेह लोके परत्र च ।१२२॥
एवं सुतीक्ष्ण ते प्रोक्तं यथा पृष्टं त्वया मम । हृदये मानसीपूजाविधानं राघवस्य च ॥१२३॥

श्रीरामदास उवाच

एवं शिष्य सुतीक्ष्णाय मुनयेऽगस्तिना पुरा । यत्प्रोक्तं तन्मया सर्वं तव प्रोक्तं सविस्तरात् ॥१२४॥
शिष्याधुना बहिःपूजाविधानं च मयोच्यते । नरः प्रातः समुत्थाय कृत्वा शौचादिकाः क्रियाः १२५॥
स्नात्वा संध्यादिकं कृत्वा देवपूजां समारभेत् । तीर्थे देवालये वाऽपि गोष्ठे पुण्यस्थलेषु च ॥१२६॥
नद्यास्तटे देवगेहे तुलसीसन्निधौ तथा । लिप्त्वा भूमिं गोमयेन ततो पद्मानि लेखयेत् ॥१२७॥
सितरक्तहरित्पीतनीलकृष्णादिसंभवैः । नानावर्णैश्चित्रितानि तत्र पूजां समारभेत् ॥१२८॥

हे यज्ञका प्रतिपालन करनेवाले ! आपको नमस्कार है, नमस्कार है । हे अनन्त ! हे यज्ञेश ! हे हरे ! हे मुकुन्द ! हे विष्णु ! हे मुरारे ! हे श्रीवल्लभ ! हे अनन्त ! हे जगन्निवास ! श्रीराम ! हे राजेन्द्र ! आपको नमस्कार है । हे श्रीजानकीकान्त ! हे विशालनेत्र ! हे राजाधिराज ! आपमें मेरी भक्ति हो ॥ ११३–११५ ॥ तपाये हुए सुवर्णसे निर्मित और रत्नोंसे विभूषित यह सुवर्णपुष्प मैं आपको अर्पण करता हूँ । हे प्रभो ! इसे आप स्वीकार करें ॥ ११६ ॥ हृदयरूपी कमलके बीचोबीच सीता तथा समस्त आवरणोंके साथ उसपर बैठिए ॥ ११७ ॥ मन, वचन अथवा शरीरसे मैंने जो शुभ या अशुभ कर्म किया हो, वह सब आपकी प्रसन्नताका कारण बने । हे धनुर्धारी राम ! मैं आपको प्रणाम करता हूँ ॥ ११८ ॥ हे रघुपुंगव ! रात-दिन मैं हजारों प्रकारके पातक करता हूँ । मुझे अपना दास समझकर आप क्षमा कर दें ॥ ११९ ॥ हे जानकीनाथ ! हे महीपते ! हे रामचन्द्र ! आपको नमस्कार है । हे पूर्णानन्दनस्वरूप ! मैं आपको अर्घ्य देता हूँ, इसे आप ग्रहण करें ॥ १२० ॥ इस रीतिसे जो मनुष्य हृदयके भीतर या बाहर पूजन करता है, वह केवल एक बारके पूजनसे साक्षात् राम हो जाता है ॥ १२१ ॥ फिर उसके लिए क्या कहना, जो रात-दिन उसीमें लीन रहता हो । वह प्राणी इहलोक और परलोक, दोनोंकी अभीष्ट कामनाएँ प्राप्त कर लेता है । हे सुतीक्ष्ण ! तुमने हमसे जैसे पूछा, उस प्रकार मैंने मानसी पूजाका सारा विधान कह सुनाया ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ श्रीरामदासने कहा – हे शिष्य ! इस तरह सुतीक्ष्ण मुनिके लिए अगस्त्य ऋषिने उस समय जो विधान बतलाया था, सो मैंने विस्तारपूर्वक तुम्हें बतला दिया ॥ १२४ ॥ हे शिष्य ! अब मैं बाह्यपूजाका विधान बतला रहा हूँ । उपासकको चाहिये कि प्रातःकाल उठे और शौचादि-से निवृत्त होकर स्नान-संध्या आदि करे । फिर किसी तीर्थ, देवालय, गोशाला या पवित्र स्थानमें देवपूजा प्रारम्भ करे ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ ऊपर बताये स्थानोंके सिवाय किसी नदीतटपर, देवमन्दिर तथा तुलसीके पास गोबरसे लीपकर सफेद, लाल, हरे, पीले, नीले, काले, इस तरह नाना प्रकारके रंगोंसे चित्र-विचित्र पद्म बनाकर पूजन प्रारम्भ करे ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ एक आसन एक हजार आठ श्रीरामनामका बनता है । एक आसन आठ

CC-0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अष्टोत्तरसहस्रश्रीरामलिंगात्मकासनम् । वाष्टोत्तरशतं श्रीमद्रामलिंगात्मकासनम् ॥१२९॥
अष्टोत्तरसहस्रश्रीरामभद्रासनं हि वा । वाष्टोत्तरशतं श्रीमद्रामभद्रासनं शुभम् ॥१३०॥
बहून्यन्यानि शतशः संति लघ्वासनानि हि । तेषां मध्यादेकमेवासनं संस्थाप्य चित्रितम् ॥१३१॥
पीठोपरि कृतं वस्त्रं पत्रादिष्वपि वा कृतम् । आसनोपरि जानक्या राघवादीन्निवेशयेत् ॥१३२॥
आसने सर्वतोभद्रमध्ये पद्मोपरि न्यसेत् । सीतया राघवं रम्यं वरसिंहासने स्थितम् ॥१३३॥
रामस्य पृष्ठभागे च लक्ष्मणं स्थापयेत्ततः । रामस्य दक्षिणे पार्श्वे भरतं विन्यसेच्छुभम् ॥१३४॥
रामस्य वामपार्श्वे हि शत्रुघ्नं विन्यसेच्छुभम् । पुरतो रामचन्द्रस्य वायुपुत्रं तु विन्यसेत् ॥१३५॥
रामस्य वायुदिग्भागे सुग्रीवं स्थापयेत्ततः । ईशान्यां रामचन्द्रस्य विन्यस्य च विभीषणत् १३६॥
रामस्य वह्निदिग्भागे विन्यसेदं मदं ततः । नैर्ऋत्यां रामचंद्रस्य जांघवंतं तु विन्यसेत् ॥१३७॥
पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राग्दिग्ज्ञेयाऽर्चने त्विह । सर्वशास्त्रेष्वेवमेव निर्णयः कथ्यते बुधैः ॥१३८॥
लक्ष्मणस्य करे देयं छत्रं मुक्ताविराजितम् । भरतस्य करे देयं चामरं रुक्ममण्डितम् ॥१३९॥
शत्रुघ्नस्य करे देयं व्यजनं चित्रितं शुभम् । हनूमतः करे देयं रामस्य पादुकाद्वयम् ॥१४०॥
सुग्रीवस्य करे देयं जलपात्रं मनोहरम् । करे विभीषणस्यापि देयं मुकुरमुत्तमम् ॥१४१॥
देयं तांबूलपात्रं च वालिनन्दनसत्करे । जांबवतः करे देयो वस्त्रकोशो महत्तमः । १४२॥
नवायतनमेवं हि स्थापयेद्राघवस्य च । अथवा पञ्चायतनं स्थापयेदासनोपरि ॥१४३॥
सीतया रामचन्द्रं च मध्ये पृष्ठे तु लक्ष्मणम् । भरतं सव्यपार्श्वे च शत्रुघ्नं वामपार्श्वके ॥१४४॥
पुरतो वायुपुत्रं च पूर्वोक्तैरुपचारकैः । एवं संस्थापयेद्भक्त्या रामं भद्रासनोपरि ॥१४५॥
अथवा सीतया रामं मध्ये स्थाप्य ततः परम् । रामस्य पृष्ठे सौमित्रिं रामाग्रे वायुनन्दनम् ॥१४६॥
स्थाप्यैवं पूजयेद्भक्त्या रामं धृतशरासनम् । अथवा सीतया रामं लक्ष्मणं परिपूजयेत् ॥१४७॥

सौ रामके नामसे अङ्कित करके बनाया जाता है । एक हजार आठ नामोंसे अङ्कित करके एक श्रीराम-भद्रासन बनता है। दूसरा एक सौ आठ नामोंसे अङ्कित करके श्रीरामभद्रासन बनता है ॥ १२९ ॥ १३० ॥ इसी तरह बहुतसे और भी छोटे-छोटे आसन बनते हैं। उनमेंसे रंगकर कोई एक आसन बनाये ॥ १३१ ॥ इस आसनकी रचना वस्त्र बिछाकर पीढ़ेपर करे। उसके ऊपर जानकी तथा राम आदिको बैठाये ॥ १३२ ॥ सर्वतोभद्रके मध्यमें बने हुए कमलके ऊपर पहले एक सुन्दर सिंहासनपर राम तथा सीताको बिठाले ॥ १३३ ॥ रामके पीछे लक्ष्मणको स्थापित करे। रामके दाहिने बगल भरतको स्थापित करे और रामके पार्श्वमें शत्रुघ्नको बिठाले। रामचन्द्रजीके आगे हनुमानजीकी स्थापना करे ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ रामके वायव्य कोणमें सुग्रीवकी स्थापना करे। ईशानकोणमें विभीषणको स्थापित करके अग्निकोणमें अङ्गदको तथा नैर्ऋत्यकोणमें जाम्बवान्-की स्थापना करे ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ पूज्य और पूजक इन दोनोंके लिए प्राची दिशा ही पूजन करनेमें श्रेष्ठ है। पण्डितोंका कहना है कि समस्त शास्त्रोंमें इसी प्रकारका निर्णय किया गया है ॥ १३८ ॥ लक्ष्मणके हाथमें मोतियोंसे सुसज्जित छत्र दे। भरतके हाथसे सुवर्णसे मण्डित चमर दे ॥ १३९ ॥ शत्रुघ्नके हाथमें चित्रित व्यजन (पंखा) दे और हनुमान्‌जीके हाथमें रामकी दोनों पादुकाएँ दे ॥ १४० ॥ सुग्रीवके हाथमें मनोहर जल-पात्र और विभीषणके हाथमें उत्तम शीशा दे ॥ १४१ ॥ अङ्गदके हाथमें सुन्दर ताम्बूलपात्र दे, जाम्बवान्‌के हाथमें कपड़ोंकी पेटी दे। इस तरह श्रीरामचन्द्रजीके नवायतनकी स्थापना करे ॥१४२॥१४३॥ मध्यभागमें सीताके साथ रामचन्द्रजीको बिठाले, पीछे लक्ष्मणको, दाहिने बगल भरतको, बायें बगल शत्रुघ्नको तथा सामने हनुमान्‌जी-को पूर्वोक्त उपचारोंके साथ बिठाले । इस तरह सुन्दर आसनपर रामकी स्थापना करे। इसे ही रामपञ्चायतन कहते हैं ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ अथवा सीताके साथ-साथ रामको मध्यमें बिठालकर रामके पीछे लक्ष्मण और आगे हनुमान्‌जीकी स्थापना करके धनुर्धारी रामका पूजन करे। अथवा सीताके साथ राम और लक्ष्मणकी पूजा

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सीतानुजौ विना पूजा रामस्यैकस्य नाचरेत् । कृता चेद्विघ्नकर्त्री सा भवेदत्र न संशयः ॥१४८॥
नवायतनपूजा सा श्रेष्ठा ज्ञेया शुभप्रदा । या पञ्चायतनी पूजा ज्ञेया सा मध्यमाऽत्र हि ॥१४९॥
त्रिदैवत्या तु या पूजा कनिष्ठा सा निगद्यते । अतिकनिष्ठा पूजा सा द्विदैवत्या स्मृता हि सा ॥१५०॥
कोदण्डं वामहस्ते च तूणीरं वामपार्श्वके । निजनामाङ्कितं बाणं दधानं दक्षिणे करे ॥१५१॥
एवं श्रीराघवं स्थाप्य ततः पूजां समारभेत् । आत्मनो वामभागे च जलकुम्भं निधाय हि ॥१५२॥
आत्मनो दक्षिणे भागे पूजापात्रं निवेशयेत् । आत्मनः पुरतः पात्रं स्थापयेद्विस्तृतं वरम् ॥१५३॥
प्राङ्मुखः सुखमासीनो धृतपद्मासनः शुचिः । मौनी धृताक्षतुलसीमालो निश्चलमानसः ॥१५४॥
बद्धग्रंथिशिखः शुद्धवस्त्रो धृतपवित्रकः । शुद्धद्वारावतीमृत्कृत्तिलको मुद्रिकांकितः ॥१५५॥
नत्वादौ गणराजं च तिथिवारादि कीर्तयेत् ।
भूमिशुद्धिं भूतशुद्धिं न्यासौ कृत्वा यथाक्रमम् । प्रोक्षणीपात्रमेकं तु जलपूर्णं प्रकारयेत् ॥१५६॥
दूर्वागन्धाक्षतपुष्पैस्तत्पात्रं परिपूरयेत् । प्रोक्षयेत्तेन नीरेण पूजाद्रव्यं सहात्मना ॥१५७॥
पाद्यार्घ्याचमनार्थं तु त्रीणि पात्राणि विन्यसेत् । गणराजं पूजयित्वा सम्पूज्य वरुणं ततः ॥१५८॥
पांचजन्यं पूजयित्वा प्रोक्षयेत्तज्जलैरपि । पूजाद्रव्यं पूर्ववच्च स्वात्मानं च भुवं तथा ॥१५९॥
धेनुशङ्खचक्रपक्षिराजमुद्राः प्रदर्शयेत् । शैली दारुमयी लौही लेप्या लेख्या च सैकती ॥१६०॥
मनोमयी मणिमयी प्रतिमाऽष्टविधा स्मृता । अथ ध्यायेद्रामचन्द्रं ससीतं पुरतः स्थितम् ॥१६१॥
द्विभुजं धृततूणीरं चापबाणधृतायुधम् । दिव्यालङ्कारसंयुक्तं पीतकौशेयवाससम् ॥१६२॥
सलक्ष्मणं सशत्रुघ्नं भरतेन समन्वितम् । हनुमत्सेवितपदं सिंहासनविराजितम् ॥१६३॥
सितछत्रसमायुक्तं दिव्यचामरवीजितम् । विभीषणसमायुक्तं सुग्रीवपरिवंदितम् ॥१६४॥

करे ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ सीता और लक्ष्मणके बिना अकेले रामकी पूजा कभी न करे । यदि ऐसी पूजा की जाती है तो वह प्रायः विघ्न करनेवाली ही हुआ करती है । इसमें कोई संशय नहीं है ॥ १४८ ॥ नवायतनपूजा सर्वश्रेष्ठ और पञ्चायतन पूजा मध्यम होती है ॥ १४९ ॥ त्रिदेवकी पूजा कनिष्ठ कही गवी है । वह पूजा तो अत्यन्त कनिष्ठ होती है, जिसमें केवल दो देवताओंकी पूजा की जाती है ॥ १५० ॥ जिनके वायें हाथमें धनुष और वायें बगल तरकस है, अपने नामसे अङ्कित बाण दाहिने हाथमें है ॥ १५१ ॥ इस तरहके रामचन्द्रकी स्थापना करके पूजा प्रारम्भ करे । पूजा करते समय वामभागमें एक कलश भी अवश्य रख लेना चाहिए ॥ १५२ ॥ अपने दाहिने बगल पूजापात्र रखना चाहिए और आगे भी विस्तृत पात्र रखना उचित है ॥ १५३ ॥ उपासकको चाहिए कि आनन्दपूर्वक पूर्वकी ओर मुख करके पद्मासनसे बैठे और निश्चल मन करके तुलसीकी माला लिये, शिखामें ग्रन्थि दिये, हाथोंमें पवित्री तथा शरीरमें पवित्र वस्त्र धारण किये, द्वारकाकी शुद्ध मृत्तिकाका तिलक लगाकर ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ पहले गणेशजीको प्रणाम करे । फिर क्रमशः तिथि-वार आदिका उच्चारण करके भूमिशुद्धि, भूतशुद्धि तथा अंगन्यास-करन्यास करके प्रोक्षणीपात्रमें जल भरे । दूर्वा, गन्धाक्षत, पुष्प आदि उसमें डाले और प्रोक्षणीपात्रके जलसे पास रक्खी हुई पूजनसामग्रीका प्रोक्षण करे । पाद्य, अर्घ्य एवं आचमनके लिये सामने तीन पात्र रक्खे । फिर गणेशजी, वरुण तथा पाञ्चजन्य शखका पूजन करके उसके जलसे अपना, पूजन-सामग्री तथा पृथ्वीका प्रोक्षण करे ॥ १५६–१५९ ॥ इसके अनन्तर सुरभी, शंख, चक्र, गरुड एवं राममुद्राका प्रदर्शन करे । पत्थरकी, काष्ठकी, चूना-ईंटकी, रङ्गसे बनी, चित्रकारी की हुई, बालुकामयी, मानसी और मणिमयी ये आठ प्रकारकी प्रतिमाएं होती हैं । ऊपर बतलायी क्रियायें कर लेनेके बाद उपासकको चाहिए कि सीताके साथ बैठे हुए इस प्रकारके रामका ध्यान करे–जिनके दो भुजाएं हैं, जो तूणीर तथा धनुष-बाण आदि विविध प्रकारके शस्त्र धारण किये हैं, उनके शरीरमें दिव्य अलङ्कार पड़े हैं और वे पीला कौशेय वस्त्र धारण किये हैं ॥ १६०–१६२ ॥ लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न उनके साथ हैं, हनुमान्‌जी उनके चरणकी सेवा कर रहे हैं और राम उत्तम सिंहासनपर बैठे हैं ॥१६३॥ ऊपर सफेद छत्र लगा है, दिव्य चमर चल रहे हैं, विभीषण और सुग्रीव

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Nafafgarh Delhi Collection

जाम्बवता समायुक्तमङ्गदेन परिष्टुतम् । अयोध्यावासिनं राममेवं हृदि विचिंतयेत् ॥१६५॥
सीताराम समागच्छ मदग्रे त्वं स्थिरो भव । गृहाण पूजां मद्दत्तां कृतमावाहनं तव ॥१६६॥
हिरण्मयं रत्नयुक्तं नानाचित्रविचित्रितम् । सिंहासनं सवस्त्रं च ह्यासनार्थं ददामि ते ॥१६७॥
चन्दनागुरुसंयुक्तैर्जलैस्तीर्थसमुद्भवैः । पाद्यं गृहाण श्रीराम मया दत्तं प्रसीद मे ॥१६८॥
पुष्करादिषु तीर्थेषु गङ्गादिषु सरित्सु च । यत्तोयं तन्मयाऽऽनीतं दत्तमर्घ्यं गृहाण भोः ।.१६९ ।
सुगन्धवासितं तोयं बहुतीर्थसमुद्भवम् । आचमनार्थमानीतं गृहाण त्वं सुरेश्वर ॥१७०॥
हरिद्राकुंकुमैर्युक्तं सुगन्धद्रव्यमिश्रितम् । सुगन्धस्नेहसंमिश्रमुद्वर्त्तनमथास्तु ते ॥१७१॥
कामधेनूद्भवं क्षीरं नन्दिन्या दधि सुन्दरम् । कपिलाया घृतं श्रेष्ठं मधु विंध्याद्रिसंभवम् ॥१७२॥
सितोपलसमानाम सितायुक्तं मनोहरम् । पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं स्नानार्थं त्वं गृहाण भोः ॥१७३॥
गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती । नर्मदा सिंधुकावेरी सरयू गण्डकी तथा ॥१७४॥
ताम्रपर्णी भीमरथी कृष्णा वेणी महानदी । गोमती सागराः सप्त पयोष्णी भवनाशिनी ॥१७५॥
पूर्णा तापी तुङ्गभद्रा क्षिप्रा वेगवती तथा । पिनाकी प्रवरा सिन्धुफेणा सार्द्धत्रयो नदाः ।.१७६॥
घृतमाला कृतमाला मही निक्षेपिका तथा । पयोष्णी प्रेमगङ्गा च चित्रगङ्गा करानदी ॥१७७॥
नीरा चर्मण्वती वृद्धा वंजरा च पुनः पुनः । सिंधुक्षीरा च वैकुण्ठाऽलकनन्दा च वारणा ॥१७८॥
इत्यादिसर्वतीर्थेषु यत्तोयं वर्तते शुभम् । तन्मयाऽऽनीममद्यात्र स्नानं कुरु रघूत्तम ॥१७९॥
पुनराचमनं रम्यं सर्वतीर्थसमुद्भवम् । गृहाण रघुनाथ त्वं दीयते यन्मया तव ॥१८०॥
सुवर्णतन्तुभिश्चित्रं पीतकौशेयसंभवम् । वस्त्रयुग्मं प्रदास्यामि गृहाण रघुनायक ॥१८१॥
शुद्धं हेममयं रम्यं नवतन्तुसमुद्भवम् । ब्रह्मग्रन्थिसमायुक्तं ब्रह्मसूत्रं प्रगृह्यताम् ॥१८२॥

आगे खड़े बन्दना कर रहे हैं॥ १६४ ॥ जाम्बवान्के साथ-साथ अङ्गदजी खड़े स्तुति कर रहे हैं। इस प्रकार अयोध्यावासी रामका मनमें ध्यान करे ॥ १६५ ॥ और कहे—हे सीताराम ! आप मेरे सामने आकर बैठिए। मैं आपका पूजन करूँगा। मैं आपका आवाहन करता हूँ। आप आइए और मेरी पूजा स्वीकार करिए ॥ १६६ ॥ सुवर्णका बना हुआ तथा रत्नखचित होनेसे चित्र-विचित्र मालूम पड़नेवाला और सुन्दर वस्त्रसे वेष्टित सिंहासन मैं आपको बैठनेके लिए देता हूँ ॥ १६७ ॥ चन्दन और पुष्पसे मिले हुए तीर्थोंके जलका पाद्य बनाकर आपको देता हूँ। इसे आप स्वीकार करें और मेरे ऊपर प्रसन्न हों ॥ १६८ ॥ पुष्कर आदि तीर्थों तथा गङ्गा आदि नदियों-से लाये जलका अर्घ्य बनाकर मैं आपको देता हूँ, इसे स्वीकार करिए ॥ १६९ ॥ सुगन्धसे वासित एवं कितने ही तीर्थोंसे लाया हुआ जल मैं आपको आचमनके लिए देता हूँ। हे सुरेश्वर ! इसे आप ग्रहण कीजिए ॥ १७० ॥ हल्दी-कुमकुम और बहुतसे सुगन्धद्रव्योंसे मिश्रित तथा सुगन्धमय तेल आदिसे मिला हुआ जल मैं आपको स्नान करनेके लिये देता हूँ ॥ १७१ ॥ कामधेनुका दूध, नन्दिनी गौका दही, कपिला गौका घृत, विन्ध्य-पर्वतसे उत्पन्न उत्तम मधु, ॥ १७२ ॥ सफेद पत्थरके समान चमकती हुई चीनीसे मिला पंचामृत मैं आपको स्नान करनेके लिए देता हूँ। इसे आप ग्रहण करिए ॥ १७३ ॥ गङ्गा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदा, सिन्धु, काबेरी, सरयू, गण्डकी, ताम्रपर्णी, भीमरथी, कृष्णा, वेणी, महानदी, गोमती, सातों सागर, भवनाशिनी, पयोष्णी, पूर्णा, तापी, तुङ्गभद्रा, क्षिप्रा, वेगवती, पिनाकी, प्रवरा, सिन्धुफेणा, साढ़े तीन नद, घृतमाला, कृतमाला, मही, निःक्षेपिका, पयोष्णी, प्रेमगङ्गा, चित्रगङ्गा, करानदी, नीरा, चर्मण्वती, वृद्धा, वञ्जरा, सिन्धुक्षीरा, वैकुण्ठा, अलकनन्दा, वारणा इत्यादि ॥ १७४–१७८ ॥ नदियोंमें जो पवित्र जल विद्यमान है, वह मैं आज यहाँ ले आया हूँ। हे रघूत्तम ! आप इसीसे स्नान कीजिए ॥ १७९ ॥ सब तीर्थोंका पवित्र जल मैं आपको पुनराचमनके लिये दे रहा हूँ। इसे आप ग्रहण कीजिए ॥१८०॥ सुवर्णके सूत्रोंसे बना तथा चित्र-विचित्र दीखनेवाला पीत कौशेय वस्त्र मैं आपको दे रहा हूँ, इसे स्वीकार करिये ॥ १८१ ॥ शुद्ध, सुवर्णमय,

CC0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

मुकुटं कुण्डले रम्ये मुद्रिकाः कङ्कणे तथा । नूपुरे रशनामालाः केयूरे रत्नमण्डिते ॥१८३॥
इत्यादीन्परमान् दिव्यान्स्वर्णमाणिक्यनिर्मितान् । त्वदर्थं च मयानीतानलंकारान् गृहाण भोः ॥१८४ ।
छत्रं सव्यजनं रम्यं चामरद्वयसंयुतम् । त्वदर्थं च मयाऽऽनीत गृह्णीष्व रिपुसूदन ॥१८५॥
सुगंधं चंदनं दिव्यं कृष्णागुरुविमिश्रतम् । रक्तचंदनसंयुक्तं गृह्णीष्व त्वं मयाऽर्पितम् ॥१८६॥
अक्षतांश्च वरान् दिव्यान्मुक्ताफलविनिर्मितान् । कस्तूर्या कुंकुमेनाक्तान् गृहाण परमेश्वर ॥१८७॥
मान्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो । मयाऽऽहृतानि पूजार्थं गृहाण रघुनायक ॥१८८॥
वनस्पतिरसोद्भूतं गन्धाढ्यं गन्धमुत्तमम् । आघ्रेयं सर्वदेवानां धूपं गृह्णीष्व राघव ॥१८९॥
साज्यं त्रिवर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया । दीपं गृहाण भो राम त्रैलोक्यतिमिरापह ॥१९०॥
भक्ष्यभक्तेन संयुक्तं सपायसघृतान्वितम् । शर्करामधुसंयुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥१९१॥
आम्रादीनि सुपक्वानि फलानि विविधानि च । समर्पितानि ते राम गृह्णीष्व रघुनन्दन ॥१९२॥
पूगीफलसमायुक्तं नागवल्लीदलैर्युतम् । जातीचतुष्टययुतं तांबूलं स्वीकुरु प्रभो ॥१९३॥
हिरण्यं ब्रह्मसंभूतं वह्नितेजःसमुद्भवम् । दीयते दक्षिणार्थं ते गृह्णीष्व रघुनंदन ॥१९४॥
एवं मया षोडशकोपचाराः सविस्तरं ते कथिताः शिशोऽत्र ।
आवाहनाद्याश्च हि दक्षिणांताः शेषां च पूजां सकलां हि वक्ष्ये ॥१९५॥
पंचवर्तिसमायुक्तं कपिलाऽऽज्यविमिश्रितम् । वह्निना योजितं रम्यं गृह्णीष्व त्वं निराजनम् ॥१९६॥
जाती चंपकमन्दारौ केतकी तुलसी तथा । दमनो मुनिकुन्दे च ह्यनंतं त्विति वै नव ॥१९७॥
एभिर्नवविधैः पुष्पैर्मन्त्रपुष्पाणि राघव । मयाऽर्पितानि गृह्णीष्व प्रसीद परमेश्वर ॥१९८॥
यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि च । तानि सर्वाणि नश्यतु प्रदक्षिणं पदे पदे ॥१९९॥

रम्य, नवीन सूत्रसे बना तथा ब्रह्मग्रन्थियुक्त ब्रह्मसूत्र मैं आपको देता हूं। इसे आप स्वीकार करिये ॥ १८२ ॥ मुकुट, रम्य कुण्डल, मुद्रिका, कंकण, नुपूर, स्वर्णनिर्मित जंजीरकी माला, रत्नमण्डित केयूर इत्यादि परम रम्य, दिव्य, स्वर्ण और माणिक्यसे बने अलंकार मैं आपके लिए लाया हूँ। इन्हें आप ग्रहण करिए ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ व्यजन और चमर संयुक्त छत्र मैं आपके लिए लाया हूँ। हे रिपुसूदन ! इसे आप स्वीकार करिए ॥ १८५ ॥ सुन्दर, गन्धयुक्त, दिव्य, कृष्ण अगुरुमिश्रित तथा लाल चन्दन मिला चन्दन मैं आपके लिए लाया हूँ, सो आप ग्रहण कीजिए ॥ १८६ ॥ मोतीके टुकड़ोंसे बनाया हुआ कस्तूरी और कुमकुममिश्रित अक्षत मैं आपको समर्पण करता हूँ, इसे आप ग्रहण करें ॥ १८७ ॥ मालती आदि सुगन्धित फूलोंसे बनी माला मैं आपको पूजाके निमित्त लाया हूँ, हे रघुनायक ! इसे आप ग्रहण कीजिए ॥ १८८ ॥ वनस्पतिके रससे उत्पन्न, गन्धयुक्त, उत्तम सुगन्धवाला और सब देवताओंके सूँघने योग्य धूप आपके लिए लाया हूँ, इसे ग्रहण कीजिए ॥ १८९ ॥ घीसे भीगी तीन बत्तियोंवाले दीपकको लाया हूँ। हे तीनों लोकोंका अन्धकार दूर करनेवाले राम ! इसे आप ग्रहण करिए ॥ १९० ॥ खाने योग्य अन्न, दूध, घी, चीनी तथा मधुमिश्रित नैवेद्य मैं आपको अर्पण करता हूँ, इसे ग्रहण करिए ॥ १९१ ॥ आम्र आदि खूब पके अच्छे-अच्छे फल मैं आपको अर्पण करता हूँ, इसे ग्रहण करें ॥ १९२ ॥ सुपाड़ी युक्त पानके पत्तोंसे जोड़ा हुआ और अनेक मसालोंसे युक्त ताम्बूल आप ग्रहण करें ॥ १९३ ॥ हे रघुतन्दन ! ब्रह्मसे उत्पन्न तथा अग्निके तेजसे जायमान सुवर्ण मैं दक्षिणाके लिए आपको देता हूँ, उसे आप स्वीकार करें ॥ १९४ ॥ हे वत्स ! इस तरह मैंने विस्तारपूर्वक आवाहनसे दक्षिणा तकके षोडश उपचारोंको कह सुनाया। शेष पूजाविधि आगे बतलाता हूँ ॥ १९५ ॥ पाँच बत्तियोंसे युक्त, कपिला गौके घृतसे मिश्रित एवं अग्निसे संयोजित रम्य नीराजन मैं आपको अर्पण करता हूँ, सो स्वीकार करिए ॥ १९६ ॥ जूही, चम्पा, मन्दार, केतकी, तुलसी, दमनक, अनन्त और दो प्रकारके मुनिकुन्द इन नौ फूलोंका मन्त्रपुष्प मैं आपको देता हूँ। हे परमेश्वर ! इसे स्वीकार करिए और मेरेपर प्रसन्न होइए ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ जन्मान्तरमें भी मैंने जिन किन्हीं पापोंको किया हो, वे नष्ट हो जायँ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

उरसा शिरसा दृष्टचा मनसा वचसा तथा ।पद्भ्यां कराभ्यां जानुभ्यां साष्टांगश्च नमोस्तुते२००॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् । पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वर ॥२०१।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं रघूत्तम । यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥२०२॥
एवं श्रीरामचन्द्रस्य भक्त्या कार्यं प्रपूजनम् । निरंतरं तथा कार्यं नवम्यां च विशेषतः ॥२०३॥

विष्णुदास उवाच

गुरो नवविधैः पुष्पैस्त्वया पुष्पांजलिः कथम् । निवेदितोऽत्र रामस्य पूजने तद्वदस्व माम् ॥२०४॥
त्वत्तो नानाविधाः पूजाः सुराणां च मया श्रुताः । पूर्वं तासु श्रुतो नैव नवपुष्पांजलिः कदा ॥२०५॥

श्रीरामचन्द्र उवाच

सम्यक् पृष्टं त्वया शिष्य सावधानमनाः शृणु । आसीत्पुरा द्विजवरः कावेर्य्या उत्तरे तटे ॥२०६॥
रामनाथपुरे कश्चित्सुन्दराख्योऽतिभक्तिमान् । तस्यासन्नव पुत्राश्च रामचिंतनतत्पराः ॥२०७॥
चन्द्रोऽतिचंद्रश्चंद्राभश्चन्द्रास्यश्चंद्रशेखरः । चन्द्रांशुर्जितचन्द्रश्च चन्द्रचूडोऽष्टमः स्मृतः ॥२०८॥
रामचन्द्रश्चेति नव गृहाभाश्च नव स्मृताः । एकदा ते त्वयोध्यायां रामं भक्तकृपाकरम् ॥२०९॥
प्रष्टुं ययुश्चैत्रमासे तस्थुस्ते सरयुतटे । तावत्तत्र समायाता नानादेशांतरस्थिताः ॥२१०॥
जनौघानां कोटयश्च नानावाहनसंस्थिताः । सरय्वां रामतीर्थे हि चैत्रस्नानमादरात् ॥२११॥
तेषां समागतानां हि संमर्दस्तत्र वै ह्यभूत् । संमर्दाद्रामचन्द्रस्य तेषां नाभूच्च दर्शनम् ॥२१२॥
तदा ते मंत्रयामासुर्नव विप्राः परस्परम् । कथं श्रीराघवस्यात्र संमर्दे दर्शनं भवेत् ॥२१३॥
चेज्जातं त्वतियत्नेन तर्हि तत्किं न दर्शनम् । यावत्स्वस्थेन मनसा राघवो न निरीक्षितः ॥२१४॥
तावत्तद्दर्शनं नैव तुष्टिं नो जनयिष्यति । तदा चन्द्रोऽब्रवीज्ज्येष्ठस्त्वत्रैव रामदर्शनम् ॥२१५॥

एक-एक पग चलकर मैं आपकी प्रदक्षिणा करता हूँ ॥ १९९ ॥ हृदयसे, मस्तकसे, दृष्ठिसे, मनसे, वचनसे, हाथोंसे, पैरोंसे और घुटनोंसे मैं साष्टांग प्रमाण करता हूँ ॥ २०० ॥ हे परमेश्र ! न मैं आवाहन करना जानता हूँ, न विसर्जन करना आता है । पूजन करना भी मैं नहीं जानता । यदि कुछ भ्रम हुआ हो तो आप क्षमा करं ॥ २०१ ॥ हे रघूत्तम ! मंत्रसे, क्रियासे और भक्तिसे हीन मैंने जो कुछ पूजा की है, हे देव ! वह सब परिपूर्ण हो जाय ॥ २०२ ॥ इस तरह निरन्तर भक्तिपूर्वक पूजन करना चाहिए और नवमीको विशेष करके ऐसा करना उचित है ॥ २०३ ॥ विष्णुदासने कहा-हे गुरो ! इस पूजनके प्रसङ्गमें आपने नौ प्रकारके फूलोंसे पुष्पाञ्जलि देनेकी विधि क्यों बतलायी है ? सो आप हमसे कहिये ॥ २०४ ॥ अबतक आपने मुझे बहुतसे देवताओंका विविध पूजन बताया, किन्तु उनमें नवपुष्पाञ्जलि आपने कहीं नहीं बतलायी ॥ २०५ ॥ श्रीरामदासने कहा—हे शिष्य ! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया है, सो सावधान मन होकर सुनो । बहुत दिनों-की बात है, काबेरी नदीके उत्तर तटपर रामनाथपुरमें अति भक्तिमान् सुन्दर नामका एक ब्राह्मण रहता था । वह रामका ध्यान करता था । रामका ध्यान करनेवाले उस भक्तके नौ बेटे थे ॥ २०६ ॥ २०७ ॥ चन्द्र, अति-चन्द्र, चन्द्राभ, चन्द्रास्य, चन्द्रशेखर, चन्द्रांशु, जितचन्द्र, चन्द्रचूड़ और गृहाभ रामचन्द्र ये उन लड़कोंके नाम थे । एक बार चैत्रके महीनेमें वे नवों लड़के भगवान् रामचन्द्रका दर्शन करनेके लिये अयोध्या गये । वहाँ पहुँचकर वे सरयूके तटपर पहुँचे । तब तक अनेक देशोंके रहनेवाले करोड़ों मनुष्य चैत्रमास-स्नानके लिये अनेक प्रकारकी सवारियोंपर चढ़कर वहाँ आ पहुँचे ॥ २०८–२११ ॥ उन आये हुए लोगोंकी भारी भीड़के कारण वे नवों ब्राह्मणकुमार रामचन्द्रजीका दर्शन नहीं पा सके ॥ २१२ ॥ उस समय उन्होंने परस्पर मंत्रणा की कि इस प्रकारकी भीड़में रामचन्द्रजीका दर्शन कैसे हो ॥२१३॥ बहुत प्रयत्न करनेपर यदि थोड़ा-सा दर्शन हो भी जाय तो जबतक अच्छी तरह उन्हें न देख सकूँ तो दर्शनसे लाभ ही क्या ? ॥ २१४ ॥ उस क्षणिक दर्शनसे हमें सन्तोष नहीं होगा । उनमेंसे ज्येष्ठ भ्राता चन्द्र बोला कि हमलोग तीव्र तपस्या करके यहीं ही रामचन्द्रजीका

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

वयं तीव्रेण तपसा प्राप्स्यामस्तप्यतां तपः । तच्चन्द्रवचनं श्रुत्वा पुनः प्रोचुर्द्विजोत्तमाः ॥२१६॥
एककाले तु सर्वेषां तपतामन्तरेण हि । कस्यादौ रामचन्द्रश्च दास्यत्यत्र प्रदर्शनम् ॥२१७॥
कस्य दास्यति पश्चाच्च विदितं तद्भविष्यति । कस्यास्मासु दृढा भक्तिर्विदिता सा भविष्यति ॥२१८॥
एवं परस्परं चोक्त्वा ते सर्वे द्विजसूनवः । त्यक्ताहारा वायुभक्षाश्चैकांते तत्परेण हि ॥२१९॥
गत्वाऽतिदूरं संमर्दात्तेषुः सर्वे तपो महत् । तत्सर्वं राघवो ज्ञात्वा सर्वसाक्षी जगत्प्रभुः ॥२२०॥
तेषां स्वदर्शनं दातुं नवमे दिवसे मुदा । मंत्रायामास श्रीरामः क्षणं चित्ते समास्थितः ॥२२१॥
एककाले तु सर्वेषां यदि दास्यामि दर्शनम् । तर्ह्येव तुष्टिः सर्वेषां भविष्यति न चेन्नहि ॥२२२॥
अतोऽद्याहं करिष्यामि नव रूपाणि निश्चयात् । एवं संमंत्र्य श्रीरामो लक्ष्मणं प्राह सादरम् ॥२२३॥
शिबिकामानयस्वाद्य बहिर्गच्छाम्यहं मुदा । तथेति रामवाक्येन शिबिकां लक्ष्मणस्तथा ॥२२४॥
आनयामास दूतैः स राघवाय न्यवेदयत् । तदा सिंहासनाद्रामश्चोत्तीर्य शिबिकास्थितः ॥२२५॥
बन्धुभिर्मंत्रिवर्यैश्च सुहृन्मित्रादिभिर्युतः । बहिः शनैरयोध्याया ययौ रामो मुदान्वितः ॥२२६॥
ततस्तं जनसंमर्दं समतिक्रम्य राघवः । चकार नव रूपाणि ह्यात्मनः परमेश्वरः ॥२२७॥
शिबिकाः सुहृदो भ्रातॄन्दूतान्मित्रान्सवाहनान् । चकार नवधा रामस्तदा स क्षणमात्रतः ॥२२८॥
निरीक्षितुं समायाता नात्मानं तान् जनानपि । चकार नवधा रामस्तदद्भुतमिवाभवत् ॥२२९॥
ततस्तैस्तैर्जनैर्मित्रैर्दूतैर्बन्धुजनैः सह । नवानां भूसुराणां हि ययावग्रे रघूत्तमः ॥२३०॥
ततस्ते भूसुराः सर्वे तदैकसमये प्रभुम् । आत्मनः पुरतो रामं ददृशुस्तं पृथक् पृथक् ॥२३१॥
तत्तुष्टमनसः सर्वे प्रणेमू रघुनन्दनम् । शिबिकाभ्यस्ततो रामस्त्ववरुह्य पृथक् पृथक् ॥२३२॥
नवरूपधराः सर्वान्विप्रानालिंग्य सादरम् । ऊचुर्मधुरया वाचा प्रसन्नमुखपङ्कजाः ॥२३३॥

दर्शन पा लेंगे । चन्द्रकी इस रायको सुनकर वे सब बोल उठे कि यदि हम सब भाई एक साथ तपस्या करने लग जायँ तो रामचन्द्रजी किसको पहले दर्शन देंगे ॥ २१५–२१७ ॥ और किसको सबसे पीछे ? इससे यह बात भी ज्ञात हो जायगी कि हममेंसे किसकी भक्ति दृढ़ है ॥ २१८ ॥ इस तरह परस्पर बातचीत करके वे सब ब्राह्मणबालक उस भीड़से दूर जा बैठे और भोजन त्यागकर केवल जल पीते हुए एकाग्र मनसे तपस्या करने लगे । सारे संसारके साक्षी तथा निखिल जगत्के प्रभु रामचन्द्रसे यह बात छिपी नहीं रही ॥ २१९ ॥ २२० ॥ नवें दिन उन्होंने अपनी सभामें उनको दर्शन देनेके विषयमें मन्त्रणा की ॥ २२१ ॥ इसके बाद क्षण भर अपने मनमें विचार किया कि यदि उनको एक ही समयमें दर्शन न दूँगा तो वे सन्तुष्ट नहीं होंगे ॥ २२२ ॥ इस कारण आज मैं नौ रूप धारण करूँगा । ऐसा निश्चय करके उन्होंने लक्ष्मणसे आदरपूर्वक कहा—॥ २२३ ॥ हे लक्ष्मण ! पालकी मँगाओ । आज मैं बाहर घूमने जाऊँगा । बहुत अच्छा कह तथा दूतों द्वारा लक्ष्मणने पालकी मँगवाकर रामचन्द्रजीको इसकी खबर दी । तब सिंहासनसे उतरकर राम पालकीमें बैठे और भाईयों, मन्त्रियों, सम्बन्धियों तथा मित्रोंके साथ धीरे-धीरे अयोध्यासे बाहर निकले ॥ २२४–२२६ ॥ उस विशाल भीड़को पार करके रामचन्द्रने नौ रूप धारण किया ॥ २२७ ॥ क्षण भरके भीतर रामने पालकी, सम्बन्धी, सब भाई, दूत तथा वाहन समेत सब मित्रोंको नौ रूपमें परिणत कर दिया ॥ २२८ ॥ केवल अपने तथा अपने साथियों ही की उन्होंने नौ संख्या नहीं बनायी, बल्कि जो लोग वहाँ दर्शन करने आये थे, उनको भी उन्होंने नौ संख्यामें विभक्त कर दिया । यह एक विचित्र बात हुई ॥ २२९ ॥ इसके अनन्तर उन मनुष्यों, मित्रों. दूतों, बन्धुजनों तथा ब्राह्मणोंके आगे-आगे रामचन्द्रजी चलने लगे ॥ २३० ॥ फिर क्या था, उन नवों ब्राह्मणोंने एक ही समयमें प्रभुको अपने-अपने आगे खड़े देखा ॥ २३१ ॥ इससे प्रसन्न होकर उन्होंने रामको प्रणाम किया । इसके बाद वे नवों राम अपनी-अपनी पालकियोंसे उतरे और उन ब्राह्मणोंको गलेसे लगाया । फिर मीठी-मीठी बाणीमें उनसे बोले ॥ २३२ ॥ २३३ ॥ उन्होंने कहा—हे ब्राह्मणों ! आप लोगोंने बड़ा कष्ट किया है ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

भो विप्राः श्रमिता यूयं युष्माकं कृतनिश्चयम् । बुद्ध्वा वयं पृथक्रूपैर्जाताः स्मो नवधाऽद्य हि २३४॥
एकाकालेऽत्र तपतां सर्वेषां दर्शनं निजम् । कस्य देयं तु पूर्वं हि पश्चात्कस्य प्रदीयताम् ॥२३५॥
इति सम्मन्त्र्य हृदयेन त्वद्यैकसमयेन हि । युष्माकं दर्शनं दत्तं वरयध्वं वरानितः ॥२३६॥
रामाणां बचनं श्रुत्वा ते प्रोचुर्भूसुरोत्तमाः । येनास्माकं भवेत्कीर्तिः स वरो दीयतां तु नः ॥२३७॥
तत्तेषां बचनं श्रुत्वा रामाः प्रोचुर्द्विजान्पुनः । युष्माकं दर्शनार्थं हि नवरूपधरा वयम् ॥२३८॥
अद्य जाता यतस्तस्माद्युष्माकं नामभिः सदा । नव रामाः परा ख्यातिं गमिष्यन्त्यवनीतले ॥२३९॥
अस्माकं नव यत्किंचित्तत्प्रियं हि भविष्यति । ते तेषां तु रामाणां वाक्यं श्रुत्वा द्विजोत्तमाः ॥२४०॥
सन्तुष्टस्ते नता नेमुः स्वं स्वं रामं मुहुर्मुहुः । तदा सर्वे जना रामान् लक्ष्मणान् भरतादिकान्॥२४१॥
आत्मानं नवधा जातान्दृष्ट्वा विस्मयमागताः । ततो रामाः शिबिकासु स्थित्वा पृष्ट्वा द्विजोत्तमान्२४२॥
परावृत्य ययुः सर्वे मार्गे त्वेकोऽभवत्पुनः । सर्वे जातास्त्वेकरूपास्तथा ते विस्मयं ययुः ॥२४३॥
ततो रामो बन्धुभिश्च पूर्ववन्नगरीं ययौ । गत्वा गेहे तु सीतायै सर्वं वृत्तं न्यवेदयत् ॥२४४॥
अतस्ते नव विप्राणां नामभिर्जगतीतले । ख्यातिं रामा ययुस्तत्र नव यद्यच्च तत्प्रियम् ॥२४५॥
यथार्का द्वादश प्रोक्ता एकविंशद्गणाधिपाः । रुद्रा एकादश प्रोक्ता यथाष्ट भैरवाः स्मृताः ॥२४६॥
नव दुर्गा यथा त्वत्र तथा रामा नव स्मृताः । प्रियं द्वादश सूर्याय एकादश शिवप्रियम् ॥२४७॥
एकविंशत्प्रियं यद्वद्गणेशाय महात्मने । प्रियमष्ट भैरवाय दुर्गायै तु नव प्रियम् ॥२४८॥
यथा यथाऽत्र रामाय नव शिष्य प्रियं सदा । तस्मान्नवविधैः पुष्पैरञ्जलिस्तत्प्रियो मतः ॥२४९॥

इति श्रीमदानन्दरामायणे मनोहरकांडे रामपूजाद्वयविस्तारो नाम तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

आपके कष्टको देखकर ही मैं अलग-अलग रूप धारण करके एक ही समयमें सबके समक्ष आया हूँ ॥ २३४ ॥ मैंने अपने मनमें सोचा कि ये सब भाई एक साथ एक ही समयमें तपस्या करने बैठे हैं। ऐसी अवस्थामें मैं किसे पहले दर्शन दूँ और किसे पीछे ॥ २३५ ॥ यह विचारकर मैंने आज एक ही समय तुम लोगोंको दर्शन दिया है। अब अपने इच्छानुसार वर भी माँग लो ॥ २३६ ॥ उनकी वाणी सुनकर ब्राह्मणोंने कहा—हे प्रभो ! जिससे संसारमें हमारी कीर्ति हो, हमें आप वही वरदान दीजिये ॥ २३७ ॥ इस तरह उनकी बात सुनकर रामने उन ब्राह्मणोंसे कहा कि आप लोगोंको दर्शन देनेके लिये मैंने नौ रूप धारण किया है। अतएव आप लोगोंके नामसे ही मैं नौ रामके नामसे विख्यात होऊँगा ॥ २३८ ॥ २३९ ॥ जो कोई भी नौ चीजें मुझे देगा, वे हमें अतिशय प्रिय होंगी। इस तरह उनकी बात सुनकर प्रसन्न मनसे उन ब्राह्मणोंने बार-बार रामको प्रणाम किया। उधर रामके साथवाले लक्ष्मण भरत आदि लोग अपनेको नौ संख्यामें देखकर बड़े चकराये। सदनन्तर वे सब राम पालकियोंमें बैठे और उन ब्राह्मणोंसे पूछकर अयोध्याके लिये लौट पड़े ॥ २४०–२४२ ॥ रास्तेमें रामने उन नवों रामोंका रूप समेट लिया और फिर ज्योंके त्यों एक राम हो गये। यह घटना देखकर भी लोगोंको बड़ा विस्मय हुआ ॥ २४३ ॥ इस तरह राम अपने बान्धवोंके साथ नगरीको गये। घर पहुँचकर उन्होंने सीताको उस दिनका सारा समाचार कह सुनाया ॥२४४॥ हे शिष्य ! इसी कारण राम उन नौ नामोंसे विख्यात हुए और जो-जो चीजें नौ संख्याकी दी जाती हैं, वे उन्हें विशेष प्रिय हुआ करती हैं ॥ २४५ ॥ जैसे बारह आदित्य माने गये हैं, इक्कीस गणेशजी, ग्यारह रुद्र, आठ भैरव तथा नौ दुर्गायें मानी गयी हैं, उसी तरह राम भी नौ माने जाते हैं ॥ २४६ ॥ बारह संख्याकी चीजें सूर्यको, एकादशसंख्यक रुद्रको, इक्कीस गणेशजीको, आठ भैरवको और नौ वस्तुयें दुर्गाको प्रिय होती हैं ॥ २४७ ॥ २४८ ॥ इसी तरह जो चीजें नौ होंगी, रामको अत्यंत प्रिय हुआ करेंगी। इसीलिये नौ प्रकारके फूलोंसे अञ्जलीदानका विधान मैंने बतलाया है ॥ २४९ ॥ इति श्रीशतकोटिरामचरितांन्तर्गते श्रीमदानन्दरामायणे 'ज्योत्स्ना' भाषाटीकासहिते मनोहरकांडे तृतीयः सर्गः ॥ ३ ॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Vaidya Collection